4.1.23.pdf

Title : Devi Mahatmyam

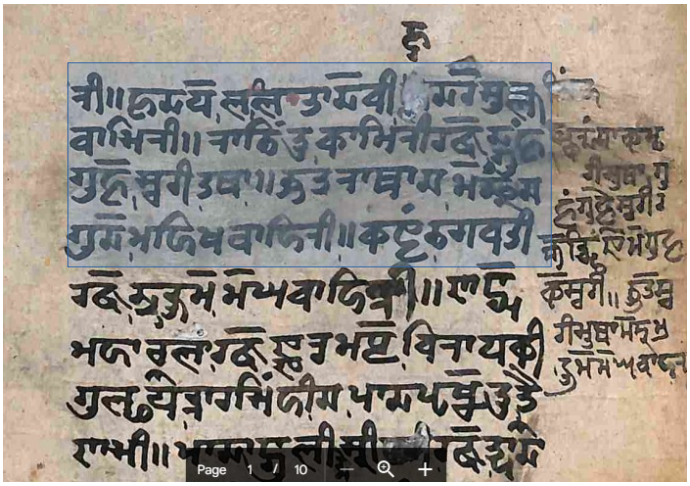

हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी ॥ ३१ ॥

नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा ।
मेढ्रं रक्षतु दुर्गन्धा पायुं मे गुह्यवाहिनी ॥ ३२ ॥

कट्यां भगवती रक्षेदूरू मे मेघवाहना ।
जङ्घे महाबला रक्षेत् जानू माधवनायिका ॥ ३३ ॥

गुल्फयोर्नारसिंही च पादपृष्ठे तु कौशिकी ।
पादाङ्गुलीः श्रीधरी च तलं पातालवासिनी ॥ ३४ ॥

नखान् दंष्ट्राकराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी ।

Ref : https://archive.org/details/TheDeviMahatmyamOrSriDurgaSaptasatiSwamiJagdisvarananda/page/n19/mode/2up

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नी॥ हृदये ललाटमध्ये [illegible] मनोमुक्त
वाभिनी॥ नाडिं उ कामिनीरद्वे मुंद
गुष्टे सुरीउवा॥ कुउ नाद्वाम भेमुम
गुमे भजिष वाजिनी॥ कष्टे रगवडी
रद्वे कुकुमे भेष्ववाजिनी॥ एष
भज वूलरद्वे हुन भष्टे विनायकी
गुलष्टे ब्रागमिंजीम धामधमु उडै
रम्भी॥ धामफुलीसी रद्वे
भमुल वाभिनी॥ नापाकंपूक
लीम कमंसुवेवुकमिनी॥ रेमकुपे
षकेभागीवमं वागीसुरीउवा॥ रक
भरुवमा भंभभृभि भेंभि पाचरी
॥ मवूलि कालरडिमु थिंडुम भज
ष्मुरी॥ धम्मवडी भज कमे कष्टम
रु भलि भुवा॥ रुलाभापीनमा ए
ल भकेष्टा भचभानिष॥ मुरं रद्वउ

हुंगुष्टे सुरीउ
कडिं एभेगुष्ट
कसुरी॥ कुउम
रीमुष्ठमेहुम
कुमेभेष्ववाजिनी

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वृक्ष्ली सूर्यांस्तुरे स्वरीउवा॥ स्वजष्ट
रं भनेवृष्टिं रद्रउं एम्मारिल्ली॥ भू
ल्ली पानेउवा वृत्तं भमानेमुत्रभेव
म॥ वस्तु जमुमभे रद्रुल्ल कल्प
भूमिठ॥ रमंकुपं उवा गेतुं सव
भक्षेप्य योगिनी॥ भवं रण भुमस्त्रव
रद्रुवारायल्ली उवा॥ जयम्म रद्र
वारादि एम्म रद्रउ वैष्णवी॥ यमः
कीर्त्तिम लक्ष्मीम भस्म रद्रउ मक्षि
ल्ली॥ उमुल्ली रद्रउ मुंइं भक्त रद्रउ
मक्षिक॥ भइ रुद्रम्म जमेवीरुटं
रद्रउ ठेरवी॥ भक्तं विपत्ते रद्रम
नंद्रभक्त गीउवा॥ रण्ण रंभजल
ल्ली चिण्यभचउः भिउ॥ रद्रजी
नउ नं वस्तिउं कवमे नउ॥ उम्मं
रद्रउं मेवीण्यउ भाषरामिनी॥ र

+ नागं कुंभ, रुक
र, मेवण्उ, मुंमुय

मु
भ
०

वस्तु

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

[illegible] ॥ ३ ॥

नेमिभद्रकालीमहाद्रिकभा।
भालंमपरमुंडंज्ञमंकहि
मभवम॥ भद्रणवः कृष्णिकंम
मंसत्रिभभिंडवा॥ पिटकंग
लगंभंभूंभराभाडुंमकुलक
भ॥ भामंभमज्ञनंमेवमण्डी
लेजिडभूठभ॥ भद्रभिंडुंभज
लडुंभडुंभजिवभद्रिनीभ॥
भंभूंमुलंजलंमेवभुभलानि
णवः मरगा॥ मण्डीभुल्लंनं
भिमंवीगोरीभभद्रवाभ॥ उडि
पुद्रभानभेधमाडेः भंभ्रष्ठ॥
मभूंउरमडंभूरणभृगृहभूए,
रुद्रभभुमडीरणधेउ॥ भनब्र
लंडवभूंभृटकंरणधेजिडि॥ भूल
भद्रः॥ ह्रीं ह्रीं भभ्रंयेवि

म
भ
०२

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ॐ श्रीगुरवे नमः

मुंडडि॥०॥ ॥ॐ त्रिनयालुवदि
ष्टिः॥ ॥ ॥ त्रिनेत्रसूर्यीभद्रमत्री
मत्रीभ्रकुटि भाक्ष ऋषि प्रत्यङ्गि
ष्टुप्छन्दः॥ ऊर्ध्वनीमुगीगीरं रमामाक्षः
भाक्ष लिंदउज भिमूर्ज॥ ध॥ विनि
योगः॥ मह्वि त्रिकुल मरमाथ कर
त्रिनेत्रं त्रिनेत्रं मुकलयाविक
भद्रिगीरभा॥ भिंदभर भमभि
सुरंगमभजं॥ ऊचानिरं मुरि
ऊर्ध्वः पदंगीरभाभि॥ त्रिनेत्रसूर्यी
भद्रमत्रिका भाला भ्रूभ्रूभ्रूवभ
मरिउसू॥ मीवृक्ष ऋषिः॥ गायत्री
छन्दः॥ मीभद्रकालीदेवउमुन
रूपसक्तिः॥ रकुमत्रिकागीरं॥
मग्रिभ्रुं॥ पत्रुमभ्रुभिभयीमीभ
द्रकालीशीहुं॥ भ्रूवभमरिउभ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ठ विनियोगः ॥ अथ ध्यानं ॥ पद्मं मनु
[illegible] मिष्यामि [illegible] कुंडी
मिरः मद्भं मंडलं कर [illegible] चुनयं
भवाद्भ कृष्णाद्ध उभा ॥ यामभ्यु
भ्यिउ दरे [illegible] भलएं दडुं भपुं कए
ठं नीलाम्भ मृडिभाभृ पाद्भ मकं
भवे भद्र कालिकाभा ॥ ॥ श्रीभ
[illegible] यउवाम ॥ [illegible] ठिः भद्र
उनयेयेभवः क [illegible] उधूमः ॥ निमा
भयउ मद्भ [illegible] विभुरा [illegible] उभा ॥ ॥
॥ भद्र भाया उरु वेन यथा भवउर
[illegible] ॥ भवद्भव भद्र कराः भावहि
भुनये रवः ॥ ॥ भुगे मिवेउर भ्रचं
मेउ वंम भभ्रुवः ॥ भरथे नभा
एकद्भ भभु हि उभ भ्रल ॥ ॥ उभृ
पालयउः भभृ कू एः भइ विवे

उपभृंभद्र
ग

ठीए इयाथवि
[illegible]
[illegible]
उपभृंभद्र ठ गंभ
[illegible]
[illegible]
[illegible]
5 ॥ +

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

रमाणः ॥ उक्तवः सहवेक्षः कैला
विश्वमिनभुमः ॥ ४ ॥ उभूउरुवसृ
मुभडिपुठलमक्षिनः ॥ नृनेगयि
भउदसु कैलाविश्वं भिकिल्लिउः
॥ ५ ॥ उउः भुपरमाद्याउं चिएमं
माणियेरुवउ ॥ सुरुउः भमक
रागमुभुमपुठलाभिठिः ॥ ६ ॥
भभाइउलिठिमुवैमुठलभूम
गमुठिः ॥ कैमेवलंमाथकुउंउइ
थिभुपरभउः ॥ ७ ॥ उउभगथा
ट्टाएनकुउभाभूभमकभडिः ॥
एकाकीकयभामकुएगाभग
कनंवनभ ॥ ८ ॥ भउइसुभभसु
ली भिएवदः भमणभः ॥ पुमा
उसुथमकीलंभुनिभिषेधमे
किउभ ॥ ९ ॥ उसुकंभिमकलंम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

भवि चा उत्तभवूः॥ ॐ उस्तु उस्तु वि
मरंभुम्भिन्नुनि वरास्तु म०॥ भे
मिउ्यउ्रुम उइ भभ्रु ह्यु भ्यन
भः॥ भ्रुचः भ्यलिउं भ्रचं भया
ळीनं भ्रमेळिउउ॥ ०० ॥ भ्रुहुट्टुं
ग्रभ्रुउ्रुत्तभ्रुउः भ्लृउ्रुवा॥ न
एन्नभ्रुण्नभ्रुमुग्रेळ्ळीभ्रळभ
ळः॥ ०३॥ भभवैरिवमंयाउः क
ठिगान्नभ लभ्रुउ॥ यभ भ्रुग
उ्रनिट्टुभ्रुभ्रळण्नठेण्नन्नभ्रुस
न्नळिंप्रुवंउ्रुह्रुचन्नुट्टुभ्रळी
ह्रुउ्रभ॥ म्नभभ्रुट्टुयुमीलभ्रुह्रु
च्च भउउंट्टुयभ॥ ०४॥ भ्रुम्भ्रुउः
भ्रुउिम्रुः पिन्नुयं वे मेगभिभ्रुउि॥
एउ्रुन्नुट्टुम्नुभउउं मिउ्यभभ
भ्रुजिवः॥ ०५॥ उइविभ्रुम्भ्रुभ्रुट्टु

ॐ

स्ति

ॐ भं०

म वेमृ भंकुं मम्ब्रभः॥ भप्पु
भुन कभुंठिः कुउम्ब्रा गभनइकः॥
०७॥ भमेक उवकभा मुंमना
उवलहृम॥ उ हृ कल्हृ वमभु
भृ कुपउः भुल्ल्येमिउभ॥ ०३॥
भुहृ वाम भउं वेमृः भमूयावन
उ रुपभ॥ वमृ उवाम॥ भंभ
णिवम वेमृ कु भुहृ वे णनिं
कुले॥ भइहृ गंवि भुम्ब्रणले
कामभा पुठिः॥ विजीनः भुरा
नेहृ गंभुहृ गा यभ णनभ॥
०७॥ वनभहृ गउमुः पीनिरभु
म्ब्रा उवकुठिः॥ भेजं न वम्भ भुहृ
ंजु कुमला कुमलाहिकभ॥ ०३
भुवहिं भुरा नंगा कगा ंजु
माहृ भंभिउः॥ किंनउं गजे

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

॥ कषंडकिंतभमभूतः मृच्छतः
किंतभमभूतः॥ राणेवाम
॥ यद्विरमेरुवंह्लबुः भइमा
मिठित्तनः॥ उषकिंठवतः भ
ऊभ्रनरप्राप्तिभ्रनभभ॥ दे
मृउवाम॥ ष्वभतुमृषाभ्रूऊ
ठवानभ्रमुंवमः॥ ३३॥ किं
करोमि नरप्राप्ति भभनि भूरतुं
भनः॥ यैभ्रतृष्टा पिद्भ्रेऊप
नलबुद्विगलतः॥ ३४॥ भ्रति
भ्रूणनऊमंम ऊद्विउषेवभभ
नः॥ किभिऊं नाठिरूपनाभिए
नत्रपिभऊभतः॥ ३५॥ यद्भ
भ्रवलं मिदुं विगुलभूपिनतृष
॥ उषंदउभनिः सुमंमेभ्रनष्टं

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri